

CHAPTER 16, आओ, मिलकर बचाएँ

PAGE 183, प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:1

1. माटी का रंग प्रयोग करते हुए किस बात की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर : कवयित्री ने 'माटी के रंग' का उपयोग 'अपनी मूल पहचान को बनाए रखने' का संकेत किया है। इस कविता में कवयित्री स्थानीय संथाली लोक जीवन की महत्वपूर्ण विशेषताओं को प्रदर्शित करने के लिए 'माटी के रंग' का प्रयोग किया है। वह चाहती है कि यहां के लोग सादगी, मासूमियत, प्रकृति और लगाव आदि को बाहरी आकर्षण बचाये रखें।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:2

2. भाषा में झारखंडीपन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : संथाली आदिवासियों की मातृभाषासंथाली है। वे दैनिक

व्यवहार में जिस संथाली भाषा का प्रयोग करते हैं, उसमें उनके राज्य झारखण्ड की पहचान झलकती है। उनकी भाषा से यह पता लग जाता है कि वे झारखण्ड राज्य के निवासी हैं। कवयित्री भाषा के इसी स्थानीय स्वरूप की रक्षा करने को कहती है। कवयित्री चाहती हैं कि यहाँ के लोग अपनी भाषा की स्वाभाविक विशेषता को नष्ट न करें।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:3

3. दिल के भोलेपन के साथ-साथ अकखड़पन और जुझारूपन को भी बचाने की आवश्यकता पर क्यों बल दिया गया है?

उत्तर : सच्चाई और ईमानदारी के लिए दिल की मासूमियत जरूरी है, लेकिन हर वक्त मासूमियत ठीक नहीं होती। भोलेपन का फायदा उठाने वालों को अकखड़पन दिखाना भी आवश्यक है। अपनी बात को व्यक्त करने तथा मनवाने के लिए अकखड़पन होना आवश्यक है। अकखड़पन के साथ साथ काम करने की प्रवृत्ति भी आवश्यक है। अतः कवयित्री भोलेपन, अकखड़पन और जुझारूपन तीनों गुणों को बचाने की आवश्यकता पर बल देती

है।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:4

4. प्रस्तुत कविता आदिवासी समाज की किन बुराइयों की ओर संकेत करती है?

उत्तर : इस कविता में आदिवासी समाज में जड़ता, काम से अरुचि, बाहरी संस्कृति का अन्धानुकरण, शराबखोरी, अकर्मण्यता, अशिक्षा, अपनी भाषा से अलगाव, परम्पराओं को पूर्णतः ग़लत समझना आदि बुराइयाँ आ गई हैं।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:5

5. इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है - से क्या आशय है?

उत्तर : कविता कहती है कि भले ही आज के विकास के कारण मानवीय मूल्यों की उपेक्षा की गई है और प्राकृतिक संपदा नष्ट हो रही है। परन्तु अभी भी बहुत कुछ ऐसा है जिसे सार्थक

प्रयासों से बचाया जा सकता है। लोगों की आस्था, उनकी टूटती उम्मीदों को जीवित करना, सपनों को पूरा करना आदि ऐसे तत्व हैं जिन्हें सामूहिक स्तर पर प्रयास करके बचाया जा सकता है।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:6

6. निम्नलिखित पंक्तियों के काव्य सौंदर्य को उद्घाटित कीजिए

-

(क) ठंडी होती दिनचर्या में

जीवन की गर्माहट

(ख) थोड़ा-सा विश्वास

थोड़ी-सी उम्मीद

थोड़े-से सपने

आओ, मिलकर बचाएँ।

उत्तर :

(क) इस पंक्ति में कवयित्री ने आदिवासी क्षेत्रों में व्याप्त विस्थापन की पीड़ा को व्यक्त किया है। विस्थापन ने वहां से लोगों की दिनचर्या को उत्साह विहीन अर्थात् ठंडी कर

दिया है। परन्तु हम अपने प्रयासों के माध्यम से उनके जीवन में उत्साह पैदा कर सकते हैं अर्थात् गर्माहट जगाने की बात करती है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से, कवयित्री का अर्थ है कि अविश्वास के दौर में अभी भी आपसी विश्वास, आशाओं और सपनों को बचाया जा सकता है। इन सभी को बचने के लिए सामूहिक प्रयास करने पड़ते हैं।

थोड़ा-सा' 'थोड़ी-सी' और 'थोड़े-से' इस तीनों का प्रयोग मामूली अंतर के साथ एक ही अर्थ ले आता हैं इसलिए यह अनुप्रास अलंकरण है। उर्दू, तत्सम और तद्भव शब्दों का मिश्रित उपयोग इस पंक्ति में किया गया हैं। छंदबद्ध और संगीत-प्रधान होने के कारण कहानी में एक आकर्षण है। खड़ी बोली का प्रयोग प्रशंसनीय है।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:7

7. बस्तियों को शहर की किस आबो-हवा से बचाने की आवश्यकता है?

उत्तर : शहर की नग्नता और जड़ता से बस्तियों को बचाने की जरूरत है। शहरी पर्यावरण में वेशभूषा, एकाकी जीवन, अलगाव, व्यस्तता आदि के साथ पर्यावरण का प्रदूषण भी एक बड़ी समस्या है। यदि बस्तियां भी इस के प्रभाव में आ गयीं तो उनकी संस्कृति और पर्यावरण प्रदूषित हो जायेंगे। कवी इस सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रदूषण से बस्तियों को बचाना चाहते हैं।

PAGE 183, प्रश्न - अभ्यास - कविताकेआसपास

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविता के आसपास:1

8. आप अपने शहर या बस्ती की किन चीज़ों को बचाना चाहेंगे?

उत्तर : मैं अपने शहर की वास्तविक और सामाजिक विशेषताओं को बचाना चाहूँगा। जैसे पास वाला बगीचा और दूसरी तरफ वाला झरना जो साल भर थोड़ा थोड़ा ही सही पर बहता रहता है।

वहां कई प्रकार के पक्षी पानी पीने आते हैं। शहर की समुहक उत्सव मनाने की परम्परा जो सबको एक साथ जोड़ के रखती है। अपने रिवाजों को बचाना चाहूंगा जो हमें जमीन से जोड़े रखती है।

11:1:20:प्रश्न - अभ्यास - कविता के आसपास:2

9. आदिवासी समाज की वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी करें।

उत्तर : आदिवासी समाज की वर्तमान स्थिति धीरे-धीरे बदल रही है। अब पहले की तुलना में आदिवासियों पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है, आदिवासी बहुल क्षेत्रों में शिक्षा केंद्र खोले जा रहे हैं। वहां के लोगों का आर्थिक स्तर सही करने के लिए वह के बेरोजगार लोगों को रोजगार दिया जा रहा है। आदिवासी संस्कृति , उनकी कला और परंपरागत विशास्ताओं को बचने के लिए विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। उनके समाज पहचान को बचते हुए उन्हें आधुनिक समाज से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।